पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

पूज्यपाद गुरुदेव का जन्म लगते असौज तीज सन् 1942 में ग्राम खुर्रमपुर-सलेमाबाद, जनपद गाजियाबाद (पहले मेरठ) उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनके पिताजी का नाम श्री नानक चन्द और माता जी का नाम श्रीमती सोना देवी था। लगभग दो मास की अवस्था में श्वासन में लेटने से ही कुछ समय के उपरान्त शिशु की गर्दन दोनों ओर हिलने लगी और होठ फड़फड़ाने लगे। इस क्रिया की पुनरावृत्ति होने पर अज्ञानतावश उपचार प्रारम्भ हो गया। परन्तु उस विशेष अवस्था में जाने की घटनाएँ बढ़ती रहीं और आयु बढ़ने के साथ-साथ मन्त्र-पाठ और प्रवचन स्पष्ट सुनाई देने लगा। छः वर्ष की आयु में इन्हें भयानक चेचक निकली जो इनके मुख-मण्डल पर अपनी स्मृति छोड़ गई।

सात वर्ष की अल्यायु में ही इनके पिताश्री ने अपने गाँव में ही पशुओं व कृषि के कार्य के लिए नौकर रख दिया। धीरे-धीरे इनके प्रवचनों की क्रिया को मनोरंजन व कौतुक का साधन बनाया जाने लगा। एक दिवस प्रवचन की प्रक्रिया के पश्चात् अत्याधिक पिटाई के कारण लगभग 15 वर्ष की अवस्था में भीषण परिस्थितियों में मध्य रात्रि में गृह को त्यागकर विचरण करते हुए अपनी कर्मभूमि बरनावा जा पहुँचे वहाँ पर आप योग मुद्रा में समाधिस्थ होकर प्रवचन करने लगे, जिसकी सुगन्धी आस-पास में तीव्रता से फैल गई। आपने अपने प्रवचनों के माध्यम से वेद ब्रह्म पारायण यज्ञों का आयोजन करना शुरु कर दिया। जन-समूह के अथाह प्रेम व सहयोग से बरनावा लाक्षागृह पर पाँच यज्ञशालाएँ, महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, आश्रम व गऊशाला की स्थापना की, जिसका प्रबन्ध उनके द्वारा स्थापित श्री गाँधी धाम समिति की देखरेख में होता है।

पूज्यपाद गुरुदेव 28 दिसम्बर 1961 में पहली बार दिल्ली प्रवचन के लिए आए। अथाह ज्ञान के भण्डार, आध्यात्मिक जगत की महान् व अद्‌भुत विभूति के प्रवचन सुनने के पश्चात् प्रवचनों को टेप करने का निर्णय लिया गया और कुछ समय के उपरान्त प्रवचनों को टेप करके प्रकाशित करने के लिए पूज्यपाद गुरुदव की संरक्षकता में वैदिक अनुसन्धान समिति का दिल्ली में गठन हो गया। जन्म जन्मान्तरों के शृङ्गी ऋषि की पुण्य आत्मा ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज इस अज्ञानता के युग में वैदिक संस्कृति का पुनः से उत्थान करने के लिए जीवनपर्यन्त लगे रहे। ऋषि-मुनियों ने अनुसन्धान के द्वारा भौतिक व आध्यात्मिक विज्ञान को अपने जीवन में कितना साकार किया है उसकी अथाह चरमसीमा इनके प्रवचनों में स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। इस अथाह ज्ञान को मानवता के लिए आचरण व व्यवहार में लाने का सरल व श्रेष्ठ मार्ग प्रदर्शित किया है और साहित्य की गुत्थियाँ स्पष्ट की हैं। जिससे मानव अपना व जनसाधारण का कल्याण करते हुए इस भव सागर से पार हो सकता है।

यह दिव्य आत्मा 15 अक्टूबर 1992 को पचास वर्ष की अवस्था में ब्रह्ममूहुर्त के समय अपने लोकों को गमन कर गई। **–वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

प्रभु! आप कैसी मेरी पवित्र माँ है। हे माँ! तू कितनी भोली है, तू कितनी पवित्र है। हम तेरे आँगन में आते हैं, तू विष्णु रूप से भी कहलाई गई है। शक्ति रूपों से भी तेरा प्रतिपादन किया गया है। माँ! तू कितनी भोली है। जब हम तेरे आँगन में आते हैं, तो ज्ञान और विवेक से युक्त होकर के आते हैं, माँ! वास्तव में तू हमारे हृदय का भरण कर देती है। तू, कैसी महत्ती है। तू कैसी ममतामयी है, बालक क्षुधा से पीड़ित हो रहा है माँ, ते उसे लोरियों का पान कराती हुई, उसकी क्षुधा और पिपासा को शान्त कर देती है। इसी प्रकार हे माँ! मैं तेरे द्वार पर, विवेकी बन करके आना चाहता हूँ। मुझे शक्ति दे, बल दे, ओज दे, तेज दे। जिससे माता मैं तेरी उस महान ज्योति का दर्शन कर सकूं। तेरी जो महान ज्योति है तेरी जो करूणामयी ज्योति है, जिस करूणा से हे विष्णु! आप संसार का लालन पालन करते हैं! मैं भी तेरे द्वार पर आना चाहता हूँ। उस पिपासा में मैं रमन करना चाहता हूँ। जिस पिपासा के लिए सदैव मानव अपने में ही परणित हो जाता है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 547 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 622
वर्ष : 46 44 समग्र वर्ष : 52

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. शिक्षा पद्धति (प्रथम-भाग)	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-16
4. राजा नल का दीपमालिका राग (वायु-सूत्र)	पूज्यपाद-गुरुदेव	17-30
5. ऋषियों के उद्‌गार		31
6. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		32-42

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेद मन्त्रों का गुणगान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' के रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)
पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली
बैंक खाता नं. - 0149000100229389, IFSC Code – PUNB–0014900
website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

।। ओ३म् ।।

शिक्षा पद्धति
(प्रथम-भाग)

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि संसार का जितना भी यह मानवीय जगत् है, इसमें जो मानवीय दर्शन है वह अपने में महान् और पवित्र कहलाता है। हमारे यहाँ नाना प्रकार की विचारधाराएँ अपने मन्तव्य के आधार पर उन्होंने प्रकट की हैं। परन्तु एक ही मानवीय रचना है और उसमें जो मानवीय दर्शन है वह अपने में महान् कहलाता है।

मानवीय दर्शन का स्रोत ऋषि मुनियों का चिन्तन

बहुत पुरातन काल हुआ ऋषि-मुनियों की एक सभा हुई और उस अनुपम सभा में यह निर्णय होने लगा कि मानवीय समाज को कैसे ऊर्ध्वा में लाया जाए? नाना ऋषि-मुनियों ने मानवीय समाज का एक कर्म (क्रम) बनाया। यह जो मानवीय समाज का कर्म है उसमें नाना प्रकार की विचारधाराएँ प्रायः हमारे वैदिक साहित्य में आती रहती हैं और कुछ वेद मन्त्रों की प्रतिभा प्रायः कुछ इस प्रकार की मानी जाती है जिसमें मानवीय जीवन की प्रतिभा का प्रायः दर्शन होता है। मैंने बहुत पुरातन काल में नाना ऋषि-मुनियों की चर्चाएँ कीं। आज भी मुझे स्मरण आ रहा है बहुत पुरातन काल हुआ, नाना विद्यालयों ने अपना एक क्रम बनाया

पठन-पाठन का। उस पठन-पाठन के क्रम में आचार्यों ने ब्रह्मचर्य के जीवन को एक महान् दिशा में ले जाने के लिए उन्होंने मानवीय दर्शन दिया और उस मानवीय दर्शन के आधार पर मानवीय जीवन की प्रतिभा उसी आधार पर एक आभा में परणित होने लगी। मुझे वशिष्ठ मुनि महाराज और नाना ऋषि-मुनियों की चर्चाएँ जब स्मरण आने लगती हैं, ज्ञान और विज्ञान की चर्चाएँ जिसमें एक मानवीय दर्शन निहित रहता है। वेद का एक-एक वेद मन्त्र यह गाथा गा रहा है कि संसार में प्रत्येक जो परमाणु है जो अणु रूप में गति कर रहा है, उसमें नाना प्रकार की विभक्त क्रियाएँ रहती हैं वह अपने में विभक्त होती रहती हैं और उनमें विभाजन के साथ तीन वस्तुएँ हमें प्राप्त होती हैं। सबसे प्रथम उसमें गुरुत्व है, द्वितीय उसमें आकुञ्चन है और तृतीय उसमें हमें तेजोमयी का आभास होता है। यह तीन प्रकार की आभाएँ इस ब्रह्माण्ड में चाहे वह किसी भी लोक-लोकान्तरों में हो उन में वह हमें प्रतीत होती रहती हैं। मानव के जीवन से इनका समन्वय रहता है और मानवीय जीवन जब इनसे कटिबद्ध होता है तो एक अनुपम विचार हमारे समीप आता है।

मैंने बहुत पुरातन काल में कहा कि संसार में यदि प्रत्येक मानव अपने कर्त्तव्य का पालन करने के लिए तत्पर हो जाता है जैसे हमारे यहाँ प्रत्येक पदार्थ अपने में कर्त्तव्यवादी हुआ है जैसे इससे पूर्वकाल में हमने प्रकट कराया कि सूर्य प्रातःकाल उदय होता है और उदय होते ही ऊर्जा देना प्रारम्भ कर देता है। वह पितरों की कोटि में माना गया है। वह हमारा पितर कहलाता है। वह हमें प्रकाश देता है, ऊर्जा देता है, मानवीय जीवन की प्रतिभा का एक दर्शन कराता है। वह कहीं से एक अनुपम प्रकाश दे रहा है जिस प्रकाश को ले करके मानव अपने जीवन को ऊँचा बनाता है। तो इससे यह प्रतीत होता है कि प्रत्येक मानव एक-दूसरे से कटिबद्ध है। मानवीयता किसी में पिरोयी हुई है। इसीलिए उस पिरोए हुए सूत्र को हमें विचार-विनिमय करना है। मैं वर्णन कर रहा था कि ऋषि-मुनियों ने चिन्तन करने के पश्चात् व्यवहार में

मानव के जीवन को परिवर्तित किया है। चार भागों में मानव के जीवन को विभक्त किया है। सबसे प्रथम ब्रह्मचरिष्यामि जब यह मानव बनता है, ब्रह्मचर्य का पालन करने लगता है तो आचार्य के चरणों में विद्यमान हो करके आचार्य की पोथी में अपने को परणित करने लगता है और कहता है कि यह मेरे गुरुदेव हैं। प्रत्येक मानव को विचारना चाहिए कि गुरु की मीमांसा यह है कि **संसार में जो अन्धकार को प्रकाश में लाने का प्रयास करता है वह गुरु कहलाता है।** बाल्यकाल में जब आचार्यकुल में ब्रह्मचारी प्रवेश करता है तो वह अज्ञानी है, शिशु है। आचार्य उसे अपने में धारण करके प्रकाश में लाने का प्रयास करता है। वह प्रकाश में लाता है। **सबसे प्रथम माता हमारे यहाँ वशिष्ठ मानी गयी है।** माता के जीवन का जो समूह है वह बड़ा विचित्र रहा है परम्परागतों से।

माता कुन्ती की तपस्या

मुझे स्मरण आता रहता है द्वापर के काल में जब मैं प्रवेश करता हूँ तो मुझे नाना माताओं का जीवन स्मरण आने लगता है। जब मैं पूर्व काल में जाता हूँ तो माता कौशल्या और उससे पूर्व काल में जाता हूँ तो माता मदालसा का जीवन मुझे स्मरण आने लगता है। इससे पूर्व काल में और भी नाना माताएँ ऐसी हुयी हैं जिन्होंने अपने जीवन काल में तप किया है। **बिना तप के परमाणु तपा नहीं करता है।** वैज्ञानिकजन जब अपनी स्थलियों पर विद्यमान होते हैं तो यह परमाणु गति करता रहता है। अन्तरिक्ष में वह भरण होता रहता है और उसी परमाणु को एक-दूसरा परमाणु अपने में मिश्रित होता रहता है और वही परमाणु तप में प्रवेश हो करके माता के गर्भ-स्थल में शिशु के रूप में प्रवेश करता रहता है। मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें यह निर्णय देते हुए कहा है, आज भी मैं उस निर्णय को देने के लिए तत्पर हूँ। जब मैं द्वापर के काल में जाता हूँ, द्वापर के काल का वह साहित्य मुझे

स्मरण आने लगता है जहाँ मुनिवरो! माता कुन्ती का जीवन मुझे स्मरण आता है। माता कुन्ती जब बाल्यकाल में आचार्य कुल में अध्ययन करती रहती थी। अध्ययन की भूमिका हमारे यहाँ पूर्वकाल में ऋषि-मुनियों ने एक मानव का कर्म (क्रम) बनाया। बाल्यकाल में ब्रह्मचारियों को शिक्षा प्रदान की गयी कि तुम इस प्रकार अपने जीवन को बनाने का प्रयास करो। माता कुन्ती जब बाल्यकाल में अध्ययन करती रहती थी तो अध्ययन करते-करते उनका जीवन एक शिरोमणि बना। वह नाना प्रकार की तरङ्गों को अपने में धारण करती रहती थीं। जिस भी काल में माता के गर्भ में शिशु का जहाँ प्रवेश हुआ उसने उसी देवता की तपस्या प्रारम्भ कर दी। उस देवता के गुणों को वह अपनी सन्तान में जन्म देना चाहती थी। वह कहीं पवन की उपासना कर रही हैं। कहीं सूर्य की उपासना उन्होंने की, कहीं इन्द्र की उपासना की। कहीं अश्वनी कुमारों की उपासना की। अश्वनी आभा में युक्त रहने वाले देवता हैं ऐसा वेद की आख्यायिका भी कहती रहती हैं। जब मैं उस काल में प्रवेश करता हूँ तो मुझे स्मरण आता रहता है कि माता अपने में तपस्वी रही है और तपस्या करने के पश्चात् माता के गर्भस्थल में जब शिशु का प्रवेश हुआ तो वह इन्द्र की उपासना करने लगी और इन्द्र से वार्त्ता प्रकट करती रहती थी। इन्द्र नाम के हमारे यहाँ नाना पर्यायवाची शब्द माने जाते हैं। इन्द्र नाम वायु को कहा जाता है, इन्द्र नाम विद्युत को भी कहा जाता है। इन्द्र नाम के राजा भी हुए हैं। माता अपने में इन्द्र की तपस्या करने लगी और वह यह कहा करती थी हे इन्द्र! तू आ, मेरे में प्रवेश कर। इन्द्र नाम परमात्मा को भी कहा जाता है। यहाँ इन्द्र नाम विद्युत को माना गया है क्योंकि देवताजन उसकी उपासना करते रहते हैं। कुन्ती ने भी उसकी तपस्या की और शिशु को इसी प्रकार का संस्कार देने लगी, तो अर्जुन जैसों का जन्म हुआ। धर्म की उपासना, धर्म किसे कहा जाता है? धर्म की भूमिका बनाना प्रारम्भ हो गया। कुन्ती ने धर्म की उपासना की और उपासना करते-करते इतनी गम्भीरता

में परणित हो गयी कि जो कहा जाए वही सत्य हो जाए। मुनिवरो! इस प्रकार की उन्होंने अपनी धारा बनायी। **पाँचों पुत्रो में से तीन अपने पुत्र थे और दो माद्री के पुत्र थे।** ऐसी सन्तानों को जन्म देना ब्रह्मवर्चोसि कहा जाता है।

पवित्र समाज

सबसे प्रथम माता तपस्या में परणित हो जाती है। इसके पश्चात् बालक आचार्य कुल में प्रवेश करता है। **आचार्य उनके जो संस्कार हैं वह जो तरङ्गों में परणित हो रहे हैं उन परमाणुओं को जागरूक कर देते हैं।** शिष्य चरणों में विद्यमान है और विद्यमान हो करके वह तपस्या के फल दे रहा है और प्रश्नों का अध्ययन करा रहा है और वह कहता है, हे ब्रह्मचारी! तू अपनी इन्द्रियों को मुझे प्रदान कर। प्रत्येक इन्द्रियों को उन्होंने उन्हें प्रदान कर दिया। इन्द्रियों का शोधन करना यह आचार्य का कर्त्तव्य कहलाता है। तो जब बाल्यकाल में आचार्य कुल में ब्रह्मचारियों को शिक्षा आचार्य प्रदान कर देते हैं तो वह महान् और पवित्र बन जाता है। विचार क्या? माता पवित्र हो और माता के पश्चात् माता-पिता जब पवित्र होते हैं, आचार्यों के अनुसार बरतते रहते हैं, आचार्य अपने में वृतियों में परणित होता रहता है, तो आचार्य उन ब्रह्मचारियों को महान् बना देते हैं। उसके पश्चात् जब कर्त्तव्यवाद इस प्रकार का बन जाता है तो समाज पवित्र बन जाता है। उसमें महत्ता का दिग्दर्शन होने लगता है।

मानवीय जीवन

मुनिवरो! आज का विचार हमारा क्या कह रहा है? हम तुम्हें कहीं और दर्शन में ले जाना चाहते थे। परन्तु आज का हमारा वेद मन्त्र यह कहता है, हे माता! तू अपने में महान् बन करके ऊर्ध्वा की उड़ान उड़ने का प्रयास कर। आचार्य! तू ब्रह्मचारियों को उस आसन पर ले

जा जहाँ यह उन संस्कारों को अपने में पनपा सके, विचित्र बना सके। जब वह बाहरीय जगत् में प्रवेश करता है, अपने गृह के आँगन में प्रवेश करता है तो अपने में उद्धार और तपस्यावादी जीवन उसका बना रहे तो यह मानवीय दर्शन कहलाता है। आज जब मानवीय दर्शन हम अपने में धारण करते हैं। दर्शन किसे कहते हैं? आचार्य जब गृह में प्रवेश होता है, आचार्य जो गुरु है जो संस्कार कराता है, संस्कार को गति में ला देता है, जो नियमावली बना देता है उसको धारण करना एक कर्त्तव्य माना जाता है। विचार-विनिमय क्या? परम्परगतों से यह हमारे यहाँ एक मानवीय जीवन माना गया है। माता अपने में महान् बनती है। पितृ अपने में महान् बनता है और गृह में प्रवेश हो करके ब्रह्मचारी को माता जन्म देती है। उसको उद्‌बुद्ध कर देती है तो वही उद्‌बुद्धता उसी प्रकार बनी रहती है। विचार-विनिमय क्या? आगे चल करके यह प्रणाली जब लुप्त हो जाती है तो प्रणालियों में मेरे पुत्र ने एक समय मुझे यह वर्णन कराया कि आधुनिक काल में यह प्रणाली नहीं रही है। उस प्रणाली में परिवर्तन हो गया है। पुरातन काल में ब्रह्मचारियों को अथवा ब्रह्मचारिणियों को जो शिक्षा प्रदान की जाती वह ब्रह्मचर्य से तप करके गृह में प्रवेश हो करके उसके पश्चात् गृह को पति-पत्नी त्याग देते हैं। त्याग करके उनका एक महान् तपस्वी जीवन बनता है। विद्यालय में जितना भी शुद्ध और उपराम हुआ तपस्वी होगा उतना ही ब्रह्मचारियों को ऊँचा बना सकता है। मुझे बहुत-सा काल स्मरण आता रहता है। मैं उस काल में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ।

विचार केवल यह कि वानप्रस्थ ले करके जो दीक्षा ली जाती है वह दीक्षा केवल बुद्धिमानों को दी जाती है। क्योंकि वह स्वयँ बुद्धिमान होते हैं और विद्यालय में ब्रह्मचारी अथवा ब्रह्मचारिणी को शिक्षा देते हैं। अपने अनुभव प्रकट करते हैं। अपनी विचारधारा देते हैं, दर्शनों का गुथा हुआ ज्ञान देते हैं तो उसे महान् बना देते हैं। उसे महानता में परणित

करा देते हैं। मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें एक वाक्य प्रकट किया था।

महाराजा अश्वपति के यहाँ शिक्षा प्रणाली

महाराजा अश्वपति के यहाँ ऋषि-मुनियों का एक समाज एकत्रित हुआ और उन्होंने पठन-पाठन का एक क्रम बनाया। आचार्य पठन-पाठन के आश्रम में प्रवेश हुआ तो सबसे प्रथम उसका नवीन संस्कार हुआ, जब संस्कार हुआ तो दीक्षा ले करके जो वानप्रस्थी थे उनका संसार के नाना वाचनालयों से उनका हृदय परिपक्व हो गया था। उनका मानसिक जो चलन था वह बड़ा विचित्र रहा। मुझे ऐसा स्मरण है जब महान् ऋषि-मुनियों का एक समूह एकत्रित हुआ। ऋषियों में महर्षि प्रह्लाण, महर्षि शिलक, महर्षि दालभ्य, महर्षि रेणवृतिका यह सब उसमें विद्यमान थे। और भी नाना ऋषि थे। तो रेणवृतिका एक वैज्ञानिक थे उन्होंने एक यन्त्र का निर्माण किया था जिस यन्त्र में यह विशेषता थी कि मानव शब्दों का उच्चारण कर रहा है और उन शब्दों का चित्र बन करके चित्रावली में दृष्टिपात आ रहा हैं उसका जो चयन है जो शब्द हैं, जो क्रियाएँ हैं, जो ब्रह्मचारियों को उद्गीत गाया जा रहा है वह चित्र बन करके उन यन्त्रों में दृष्टिपात हो रहे थे। जब यन्त्रों में दृष्टिपात कराया तो महाराजा अश्वपति से कहा ऋषि-मुनियों ने कि महाराज जिनका संस्कार युवापन में हुआ हो तो वह आचार्य विद्यालय में नहीं होने चाहिएँ। उन्होंने इसका जब विरोध किया तो महाराजा अश्वपति से कहा कि आचार्य कुल में जब आचार्य युवक होगा अथवा नवीन संस्कारवादी होगा, पत्निवादी होगा तो उसकी तङ्गें ब्रह्मचारियों को स्पर्श किए बिना रह नहीं सकतीं। यह वाक्य उन्होंने प्रकट किया। मुनिवरो! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आता रहा है, मुझे भी सौभाग्य प्राप्त होता रहा है अध्यापन का। तो महाराजा अश्वपति ने इस विरोध को स्वीकार किया और ऋषि-मुनियों का एक समाज एकत्रित किया। उन्होंने

यन्त्रों में उनकी वाणी को भरण कराया तो यन्त्रों में शब्दों का विभाजन चल रहा था। तो मुनिवरो! नवीन संस्कारवादी आचार्यों का चित्र जब उसमें दृष्टिपात आने लगा तो उसकी तरङ्गें ब्रह्मचारियों के अन्तःकरण में प्रवेश कर रही थीं ब्रह्मचारियों का हृदय उस आचरण में प्रवेश नहीं कर सका जो वास्तव में होना चाहिए। जब इस प्रकार के आचार्य विद्यालय में शिक्षा देते हैं तो ब्रह्मचारी जब विद्यालय से अवकाश पाता है तो ब्रह्मचारी जिस भूमिका में पनपा है, जिस भूमिका में रहा है, विद्यालय से जा करके वह भूमिका भ्रष्ट हो जाती है। स्वतः ही भ्रष्ट हो जाती है तो वह बाल्यकाल में आचार्य के यहाँ भय से और अनुवृतियों से उसी वस्त्रों में रहना, चरण-वन्दना करना, वह चरण वन्दना स्थायी नहीं रहती। वह स्थायी उस काल मे रहती है जब निष्पक्ष होने वाले वानप्रस्थ पति-पत्नि दीक्षा ले करके वह शिक्षा प्रदान करते हैं तो वह ब्रह्मचारियों के हृदय को पवित्र बना देते हैं। उनकी जो भूमिका है अथवा वेश है; भूषा है वह स्थायी बन जाती है। चरण-वन्दना उनकी स्थायी हो जाती है। उस समय विद्यालय सफलता को प्राप्त होते हैं।

मेरे प्यारे महानन्द जी ने मुझे वर्णन कराते हुए कहा था कि आधुनिक काल में राष्ट्र में इस प्रकार की धारा है जब राजा के मन में विचार आ जाता है कि मुझे तो ब्रह्मचारियों को विद्यालय में शिक्षा अपने राष्ट्र कोष में आर्थिक स्थिति से अपठित प्राणियों को देना है तो उस राजा का राष्ट्र-राष्ट्र नहीं रहता। राजा का राष्ट्र तब रहता है जब दीक्षा लिए हुए वानप्रस्थी विद्यालय में ब्रह्मचारियों को शिक्षा देने वाले होते हैं। मेरी प्यारी माता! ब्रह्मचारी को जब शिक्षा देती है तो उस का जो कर्म है, उसकी जो धारा है वह स्थायी रहती है तो उनकी भूमिका स्थायी बनी रहती है। आज मेरे प्यारे! महानन्द जी ने मुझे प्रकट कराया कि विद्यालयों से ब्रह्मचारियों को जब अवकाश प्राप्त होता है वह बाहरीय जगत् में आते हैं तो बाहरीय जगत् में आ करके वह ऐसे बन जाते हैं जैसे उद्दण्ड प्राणी होता है। इस प्रकार का विचार मैंने बहुत

पुरातन काल में प्रकट किया। महाराजा अश्वपति की चर्चा चल रही थी। महाराजा अश्वपति ने उन विचारों को लिया जिनका नवीन संस्कार हुआ है वह केवल विलासिता के क्षेत्र में प्रवेश कर गया है और वह ब्रह्मचारियों को शिक्षा दे रहा है। उसकी जो मन की प्रवृत्ति है वह तरङ्गित हो करके ब्रह्मचारियों को स्पर्श कर रही है इसी प्रकार ब्रह्मचारियों की भी इसी प्रकार की प्रवृत्तियाँ बन जाती हैं। शिक्षा लिया हुआ वानप्रस्थी जब शिक्षा देने लगा तो उनके चित्र जब यन्त्रों में आए तो मग्न हो रहे हैं। तरङ्गें मग्न हो रही हैं और वह हृदय में स्थायी हो करके अब तब के संस्कार जो मानव के परमाणुवाद में परणित हो रहे हैं वह जागरूक हो रहे हैं। जब वह जागरूक होते दृष्टिपात आने लगे, तो महाराजा अवश्वपति ने इस वाक्य को स्वीकार किया कि हमारे यहाँ एक यह कर्मबद्ध भूमिका होनी चाहिए। महाराजा अश्वपति ने सर्वत्र राष्ट्र में यह घोषणा कर दी कि शिक्षा का जो विभाग है शिक्षा की जो प्रणाली है वह वानप्रस्थियों को प्रदान कर देनी चाहिए। महाराजा अश्वपति के यहाँ जब यह घोषणा हुयी तो राष्ट्र में वह नियमावली बन गयी। भगवान् राम के राष्ट्र में भी इसी प्रकार की नियमावली बनी।

समाज व राष्ट्र को ऊर्ध्वा में ले जाने की प्रेरणा

आज राष्ट्रीय चर्चा में मैं तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ। विचारधारा केवल यह प्रकट करना चाहता हूँ कि प्रत्येक मानव को, राष्ट्र और समाज को ऊँचा बनाना है। यह ऊँचा उस काल में बनता है जब राष्ट्रीय प्रणाली पवित्र बन जाए और विज्ञान अपने में अनूठा बन करके रहता है। एक मानव विज्ञान की आभा में प्रवेश करना चाहता है। वैज्ञानिक मानवीय जीवन का जो एक दर्शन है वह केवल विज्ञान की आभा में निहित हो रहा है। इसीलिए आज का हमारा यह वाक्य क्या कहता है? आज का हमारा यह विचार यह कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए मानवीय दर्शन को समाज में

लाना चाहते हैं और मानवीय दर्शन क्या है? जिसका आचरण है उसकी एक भूमिका है। उसके आन्तरिक विचारों को बाहरीय जगत् में आना है। वह अवश्य आएँगे। परन्तु वह जिसे भी स्पर्श कर जाते हैं वह महान् बन जाता है और द्वितीय परमाणु जिसे स्पर्श कर जाते हैं उसका अन्तर्हृदय, अन्तरात्मा मृतक बन जाता है। तो इसी प्रकार विचारधाराओं को अपने में महान् बनाने के लिए अपना एक कर्म बनाना चाहिए।

हे मानव! तू राष्ट्रीयता को ऊँचा बना। हे राजन्! महाराजा अश्वपति की भाँति जो स्वयँ परिश्रम करते हुए द्रव्य को अपने में पान किया जाता है वही तो महान् बनेंगे। जहाँ इस प्रकार की आभा में नियुक्त रह करके वह बाहरीय जगत् में पहुँचेगा तो वह अपने मानवीय जीवन को बिखरा हुआ स्वीकार करता है। यह नहीं होना चाहिए। मैंने बहुत पुरातन काल में यह निर्णय दिया, आज भी मैं यह निर्णय दे रहा हूँ कि ऋषि-मुनियों का समाज एकत्रित होता है और राजा को यह बाध्य करता है कि इस प्रकार के नियमों को लाने का प्रयास कर। तेरा राष्ट्र पवित्र बन करके कर्त्तव्य की वेदी पर आ जाए। यहाँ प्रत्येक परमाणु अपने में हर्षित हो रहा है। इन्हीं परमाणुओं को ले करके वायुमण्डल बनता है। इन्हीं परमाणुओं को ले करके राष्ट्रवाद की भूमिका का निर्माण होता है। उसी से विचारधारा को ले करके ऋषि-मुनि अपने में महान् बना करते हैं।

विचार-विनिमय क्या? मैं तुम्हें विशेष चर्चा देने नहीं आया हूँ। विचार यह देने के लिए आया हूँ कि प्रत्येक मानव को अपने में महान् बनने के लिए मानव समाज को ऊँचा बनाने के लिए प्रत्येक मानव को अपने में महान् बनना होगा और राजा को पुकारना होगा हे राजन्! तू इस प्रकार अपने राष्ट्र की भूमिका को बना जिससे तेरे राष्ट्र में बुद्धिजीवी प्राणी हों और बुद्धिजीवी प्राणी हो करके ही तेरा राष्ट्र ऊँचा बन सकता है।

मैंने बहुत पुरातन काल में निर्णय दिया कि महात्मा अश्वपति ने यह स्वीकार किया और अपने में आश्चर्यचकित हो करके कहा। मुझे स्मरण है हमारे यहाँ भगवान् मनु ने जब राष्ट्र का निर्माण किया था तो यह उन्होंने भूमिका बनायी कि वानप्रस्थ का जितना समाज है गृहस्थ से जो तृप्त होने वाला है उसे त्याग देना चाहिए क्योंकि जब राजा वेदान्तों को लेकर चलता है, उसकी विचारधारा राष्ट्र के प्रति जाती है तो वह महान् बन जाता है। मुझे इस संसार को दृष्टिपात करने का सौभाग्य प्राप्त होता रहता है। मैं प्रायः गौरव से यह कहा करता हूँ, हे मानव! तू अपने को महान् बनाना चाहता है तो तू अपने जीवन के जो चार भाग हैं, ब्रह्मचर्यवत् में तू अपने को महानता की वेदी पर ले जा। उन्हीं विचारों से तू गृह में प्रवेश होगा, गृह को ऊँचा बनाता चल और उन्हीं से तू त्याग प्रवृत्ति में परणित हो करके जब तू अपने को विद्यालयों में ले जाएगा, विद्यालय पवित्र बन करके ब्रह्मचर्य की आभा में यह समाज परणित हो जाएगा। उसके पश्चात् वही मानव अपने में संन्यास को प्राप्त हो जाता है।

यह चर्चाएँ तो मैं तुम्हें कल ही प्रकट करूँगा, एक-एक भूमिका का वर्णन करता रहूँगा। आज का विचार हमारा क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए हमारी अपनी जो परम्पराएँ हैं, ऋषि-मुनियों का जो एक विचार है वह आज हमने तुम्हें प्रकट किया है। इन चर्चाओं को तो मैं प्रायः करता रहता हूँ। कल कुछ संन्यास की चर्चाएँ और विज्ञान के वाङ्मय में प्रवेश हो सकेंगे। आज का विचार-विनिमय क्या? हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, मैं माता का कर्त्तव्य प्रायः निहित करता रहता हूँ और आचार्यों के कर्त्तव्यवाद में जब परणित होता हूँ, अपने में महानता की वेदी पर अपने को ले जाता हूँ तो वह अतीत के काल मुझे स्मरण आते रहते हैं।

बेटा! आज का विचार-विनिमय क्या? हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए हम इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करें। हम परमपिता परमात्मा को महान् विज्ञानवेत्ता जो विज्ञानमयी स्वरूप कहा जाता है उस देव की प्रार्थना करते इस सागर से हम पार हो जाएँ। यह है आज का वाक्य। आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय क्या कि हे माता! तू अपने में तपस्वी बन करके तू अपने ब्रह्मचारी को ऊँचा बना। तेरा कर्त्तव्य पूर्ण हो जाए। गृह में वास करने वाले गृह स्वामी-स्वामिनी तू अपने को महान् बना। हे वानप्रस्थ में जाने वाले दीक्षा ले करके जब अपने विचारों को अपने अनुभव को विचारणीय बनाता है तो यह समाज पवित्र बन जाता है। यह ऋषि-मुनियों की निश्चित की हुई शिक्षा पद्धति है। मैं शिक्षा पद्धति की चर्चाएँ कल ही प्रकट करूँगा। आज का वाक्य मुनिवरो! समाप्त होने जा रहा है।

आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएँ। यह है बेटा! आज का वाक्य। अब शेष चर्चाएँ कल प्रकट करेंगे।

महर्षि महानन्द जी—अच्छा भगवन्!
पूज्यपाद गुरुदेव—ओ३म् शान्ति!

दिनाँक : 10 मार्च, 1986
समय : दोपहर 3 बजे
स्थान : लाक्षागृह, बरनावा

।। ओ३म् ।।

राजा नल का दीपमालिका राग
(वायु-सूत्र)

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेद वाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वह परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं। उसी की चेतना से यह जगत् चेतनित हो रहा है, वह इस ब्रह्माण्ड के कण-कण में ओत-प्रोत हैं। कोई भी पर्वतों की ऐसी गुफा नहीं है जहाँ वह परमपिता परमात्मा न हों, कोई समुद्रों की तरङ्गें ऐसी नहीं है जहाँ उस मेरे देव की आभा विद्यमान न हो। वह सर्वत्रता में ओत-प्रोत हैं, जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही अनुसन्धान करता रहा है अथवा उसकी महिमा को गान रूपों में गाता रहा है।

गान का स्वरूप

आज हमारे वेद मन्त्र में कुछ वायु सूत्र का पठन-पाठन हो रहा था, क्योंकि यह जो वायु है वह एक सूत्र कहलाता है। वायु-सूत्र और विष्णु-सूत्रों में केवल गान की महिमा का वर्णन आता रहा है। मानव जब गान गाता है तो यह संसार गान गाने वाले का मोहित हो जाता है। उसकी ममता में रमण करने लगता है जैसे पण्डित जब वाणी से यर्थाथ उच्चारण करने लगता है तो मानव कहता है यह सत्यवादी है। क्योंकि वह हृदय में सत्य का प्रतिपादन कर रहा है, सत्य की महानता

का वर्णन कर रहा है क्योंकि सत्य की विवेचना करता हुआ आचार्य अपनी ऊर्ध्वागति में परम्परागतों से ही यह रमण करता रहा है।

मुझे बहुत परम्परा का एक वाक्य स्मरण आ रहा है उद्दालक गोत्र में एक ऋषि थे जिनका नामोकरण स्वेधास्वेधी था, परन्तु स्वेधा ऋषि एक समय अपने चित्त के मण्डल को जानने के लिए गान गाने लगा। वह श्रोत्रों में जो भी शब्द आता रहा एक गान के रूप में, ध्वनि के रूप में उसको अपने में धारण करता रहा। परन्तु बारह वर्ष हो गए उस ध्वनि को श्रवण करते हुए। वह ध्वनि मानव के श्रोत्रों में प्रवेश होती अन्तरिक्ष में उसका समन्वय हो गया। जैसे सूत्र होता है सूत्रों में एक ध्वनि होती है। जैसे लोक-लोकान्तरों की माला होती है। सौर-मण्डलों का एक-दूसरे से समन्वय होता है तो उसमें एक ध्वनि होती है। जो उस ध्वनि को देखो श्रवण कर लेता है वह चित्त के मण्डल की धाराओं को जानने वाला बनता है। ऋषि मुनियों ने अनुसन्धान किया इस वायुसूत्र को ले करके, वायु की आभा को ले करके इसके ऊपर विचार विनिमय प्रारम्भ किया।

आज मैं तुम्हें कोई ऐसे विशेष गम्भीर विषय को लेना नहीं चाहता हूँ। विचार-विनिमय केवल यह कि हमारे यहाँ एक ध्वनि होती रहती है और वह ध्वनि श्रोत्रों में आती रहती है। यही ध्वनि रात्रि के काल में, मध्य रात्रि के काल में ध्वनि उत्पन्न होती है। उस ध्वनि का समन्वय सूर्य की तरङ्गों से सम्बन्धित रहता है, सूर्य की किरणों से जब समन्वय करता है तो वही ध्वनि द्यौ लोक में प्रवेश करती है। वही ध्वनि विद्युत् की धाराओं में रमण करती है और वही ध्वनि जब विद्युत् की धारा में गति करने लगती है तो वही ध्वनि मानवीय शरीर में ब्रह्मरन्ध्र में एक ध्वनि होती है, इसको हमारे अनहद् ध्वनि कहते हैं। तो यह बड़ी एक विशेष विचित्र तुम्हें चर्चा करने लगा हूँ। यह योगेश्वर और व्याकरण वाले पण्डित योगेश्वर योगीजनों की यह चर्चाएँ हैं। वही ध्वनि जब

ब्रह्मरन्ध में होती है तो ध्वनि का सम्बन्ध अग्नि की धाराओं से होता है। जब प्राण अग्नि में तन्मय होता है, तो उस समय दीपमालिका बन जाती है, ध्वनियों की दीपमालिका बन जाती है। परन्तु वही दीपमालिका जब प्राणायाम करने वाला साधक जब प्राण को गान गाता हुआ जब गान गाता है तो दीपमालिका, दीपावली बन जाती है। अन्धकार छाया हुआ है, एक योगी गान गा रहा है और गान गाता हुआ दीपमालिका का गान गाता है तो दीप प्रकाशित हो जाता है।

राजा नल का शिक्षा काल

मेरे प्यारे! वैदिक साहित्य में बहुत-सी चर्चाएँ आती रहती हैं, विद्या की विवेचना होती रहती हैं। आज मैं विशेष विवेचना नहीं, केवल देखो अन्तःकरण की विवेचना जो मानव चित्त का मण्डल बना हुआ है उन मण्डलों में शब्द निहित रहते हैं। चित्त निहित रहते हैं। जिनको मुनिवरो! देखो अपने में धारण करता हुआ मानव अपनत्व की धाराओं को अपनाता हुआ महान् बन जाता है। 'ध्वनि गानन् ब्रह्म वाचाः' मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब हमारे यहाँ एक ऋषि हुए हैं जिन ऋषि का नाम तुंगध्वज ऋषि कहलाता था। उन्हें तुंगध्वज ऋषि कहते थे। एक राजा हुए हैं सतोयुग के काल में जिनका नाम महाराजा नल कहलाता था। महाराजा नल उनके चरणों में ओत-प्रोत होता था, बाल्यकाल में उन्हीं के द्वारा वह शिक्षा अध्ययन करते थे। तो वह जो तुंगध्वज ऋषि थे वह दीपमालिका गान जानते थे कि कैसे दीपक में प्रकाश आ जाता है इस ध्वनि के कारण शब्दों से प्राणायाम के द्वारा कैसे मस्तिष्क जलहात् में प्रकट होता हुआ दीपमालिका बन जाती है। तो मुनिवरो! राजा नल का बाल्यकाल का नाम देखो श्वेतकेतु ब्रह्मचारी था। जब श्वेतकेतु ब्रह्मचारी उनके यहाँ अध्ययन करते थे बाल्यकाल में, उसको दीपमालिका का उन्होंने अध्ययन कराया। अध्ययन में इतने पारङ्गत हो गए कि वह दीपमालिका जब गान गाते थे, तो दीपकों

में प्रकाश आ जाता था। जैसे दीपमालिका एक हमारे यहाँ पर्व होता है जिसको दीपमालिका कहते हैं। दीपकों का प्रकाश हो जाता है तो उस समय देखो ध्वनि के द्वारा प्राण और ललाट दोनों का समन्वय करते हुए जब वह गान गाते थे, तो मुनिवरो! देखो नगर के दीपक प्रकाशित हो जाते थे।

मुझे वह काल, उनका साहित्य स्मरण आता रहता है जब वह बाल्यकाल में पारायण हो गए। पारायण होते हुए 'सम्भवः देवो ब्रह्मवाचाः ब्रह्म वर्चोसि देवाः' ब्रह्म और चर्य दोनों का समन्वय होता है क्योंकि वह जो श्वेतावृत्ति ब्रह्मचारी थे वह सदैव ब्रह्मचर्य में रत्त रहते थे। 'नरा नृत्यतम् वृहीव्रताम्' उनके गुरु ने जब उसे दीक्षित बनाया तो उनका नामकरण भी नल के रूप में परणित किया था। उसका नामोकरण नल के रूप में जब परणित हो गया, जब वह भोजनालय तपाने लगते थे तो अग्नि में ऐसा सुन्दर भोजन तपाते थे। यह भी एक विद्या होती है, वैदिक साहित्य में भिन्न-भिन्न प्रकार की विद्याएँ हैं। मेरी प्यारी माता भोजनालय में परणित हो जाती है, तो गायत्री छन्दों का पठन-पाठन करती हुयी अपने पुत्र को महान् बना देती है।

सौभाग्यशाली माता

मुझे महर्षि गौतम का और अगस्त मुनि का जीवन स्मरण आता रहता है। अगस्त मुनि की माता का नाम श्वेशनैः देवस्या था, उनका नाम शनैः दिव्या वर्णोति कहलाता था। एक समय बाल्यकाल में जब वह बालक पाँच वर्ष का था, पाँच वर्ष के पुत्र ने माता से यह कहा– हे माता! तुमने मुझे संस्कारों से जन्म दिया है, परन्तु मैं यह चाहता हूँ कि मुझे तू 12 वर्ष का भोज्य प्रदान कर जिससे मेरा अन्तरात्मा उस अन्न से पवित्र हो जाए। माता ने, शनैः ने यह वाक् स्वीकार कर लिया। स्वीकार करके माता भोजनालय एकान्त हृदय और मन की सन्तुलना को करती हुई, वह भोजन करा, भोजन को तपाती थी अग्नि में। तपाने

के पश्चात् बाल्य को भोजन कराती थी। 12 वर्ष के पश्चात् मेरे प्यारे महर्षि अगस्त मुनि महाराज आत्मा और परमात्मा की प्रतिभा को जान करके विज्ञान की धाराओं को अन्न में जितने विज्ञान की तरङ्गें होती हैं उनको सबको जान करके वह महान् बन गया, वह पवित्र बन गया। तो विचार क्या? माता जब भोजन बनाती है, भोजन तपाती है अग्नि में, तो योगेश्वर बना देती है। गायत्री का जपन हो रहा है, ध्वनियाँ वेदों का गान गा रही हैं, माता भोज्य बना रही है परन्तु वह तरङ्गों वाले भोजन को बाल्य पान करता है, तो बालक महान् बन जाता है, पवित्र बन जाता है। माता वही सौभाग्यशाली होती है जिस माता के गर्भ से बालक ब्रह्मवेत्ता या ब्रह्मविचारक बन जाए जिससे वह परमपिता परमात्मा के क्षेत्र में महानता को प्राप्त हो जाए।

महाराजा नल का वन व्रत

महाराजा नल के जीवन का मुझे वह काल स्मरण आता रहता है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव भी मुझे इसकी वार्ता प्रकट कराते रहते थे। ये वार्ताएँ मेरे हृदय में आती रहती थीं। महाराजा नल जब वह गान गाते थे तो रात्रिकाल में दीपमालिका नगरों की बन जाती थी। वह इतने पारायण बन गये थे। जब उनके राष्ट्र के बँटवारे के ऊपर कुछ भिन्नता आई, तो महाराजा नल का संस्कार भी हो गया था। महाराजा नल का जब संस्कार महारानी दमयन्ती के द्वारा हुआ तो मुनिवरो! देखो 'ब्रह्मा वाचप्रही लोकाम् वसुरध्रम् ब्रहे' महाराज पुष्कर ने जब उनके राज्य को अपना लिया और 12 वर्ष का उन्हें वन व्रत की प्राप्ति की गई। तो भयङ्कर वन में पति-पत्नी दोनों ने गमन किया और भयङ्कर वनों में महाराजा नल ने उस ब्रह्म अस्वतो में पत्नी को भी त्याग दिया। त्याग देने के पश्चात् वह तो तुंगध्वज राजा के राष्ट्र में चले गए और महारानी दमयन्ती गमन करती हुयी, एकान्त रह गई तो वनों में भ्रमण करती हुई अपने पिता के द्वार चली गई।

महारानी दमयन्ती से पुनः मिलन

जब महारानी दमयन्ती को यह प्रतीत हो गया कि मेरा स्वामी कहीं है और यह प्रतीत हुआ कि स्वामी तुंगध्वज राजा के यहाँ हैं, तो वह कैसे आएँ। 'ब्रह्म वाचप्रही लोकाम्' उन्होंने पत्रिका स्वतः इस प्रकार की हमारे यहाँ, राजा के नामोकरण से, एक स्वयँवर होने वाला है। तो स्वयँवर के नामों से वह पत्रिका महाराज तुंगध्वज राजा के यहाँ प्रकाशित की गई। तो उन्होंने कहा भाई नलव्रहे! वहाँ राजा नल का नाम शैवकृत्तिका वर्णित करते रहते थे। राजा ने कहा हे सेवक! यह पत्रिका आई है 'कुन्दनो धानम् जती ब्रह्माः' यह एक राजा हैं जो तुंगधानिक नामक राजा हैं, उनकी कन्या का नाम स्वत्तकब्रहे, राजा नल कहीं मृत्यु को प्राप्त हो गए हैं, परन्तु उनकी कन्या का पुनः संस्कार होना, स्वयँवर होना नियुक्त किया है। तो मैं वहीं जाने वाला हूँ, कैसे जा सकता हूँ। केवल दिवस दो हैं, दो ही दिवस हैं और देखो मार्ग बहुत दूरी का है, यह कैसे जा सकते हें? तो उन्होंने कहा मैंने महाराजा नल के वाहन की गति कराई है, मैं उसका सारथी रहा हूँ, यदि आपकी इच्छा हो तो मैं तुम्हारे वाहन की कृतियाँ कर सकता हूँ। तो मुनिवरो! उन्होंने कहा बहुत प्रियतम। वाहन को ले करके जब महाराजा नल वहाँ से गमन करते हैं, तो गमन करते समय जब वह गति कर रहे थे, तो महाराजा तुंगध्वज राजा का उनका एक वस्त्र भूमि पर गिर गया। तो उन्होंने कहा हे सारथी! मेरा तो वस्त्र गिर गया है। उन्होंने कहा वह तो सौ योजन दूरी जा चुका है तुम कहाँ हो सम्भोवृत्ती! आश्चर्य में हो गए राजा कि इतना गति से वाहन चल रहा है।

सायँकाल को ही मुनिवरो! देखो राजा सैनकृत्ती के यहाँ वह विद्यमान हो गए। एक वाटिका थी, उस वाटिका में राजा का देखो स्थान निवास बनाया गया। राजा को स्थिर किया गया, नाना प्रकार के पदार्थों से उनका स्वागत हुआ। तो मुनिवरो! देखो महारानी दमयन्ती ने कहीं

विचारा कि मेरे स्वामी से तो मुझे दृष्टिपात आते हैं। परन्तु देखो जो एक कन्या और एक पुत्र था वह समीप लाए गए, तो मुँह की उन्हें प्रतीती हुई। परन्तु फिर भी उन्हें विश्वास न हुआ। उन्होंने कहा राजन्! तुम्हारा जो सारथी है यह भोज्य बहुत सुन्दर प्रियता से बनाना जानता है। उन्होंने भोज्य का निर्माण किया, भोजन का आकृत किया, तो मुनिवरो! वह पान किया, तो वास्तव में उसी प्रकार का देखो रसना को स्वादन आने लगा जैसे महाराजा नल भोजनालय में निर्माण करते थे। तो ऐसे ही दृष्टिपात आने लगा तो महारानी प्रसन्न हो गई। परन्तु यह विचारा कि यह भी एक कृतियों में हैं। मैं कुछ दीपक मालिका जानती हूँ। वे भी दीपक गान जानते हैं, उस दीपक गान के सम्बन्ध में दोनों ने कहा, प्रार्थना की, हे देव! आप वास्तव में हैं तो वही परन्तु मुझे अभी शँका है। मैं यह चाहती हूँ कि आप दीमालिका गान रूपों से गाइए। जिस दीपक गान के राग के गाने से दीपमालिका बन जाती है नगरों में। राजा ने कहा हे देवी! मैं इस गान को गाने योग्य नहीं हूँ क्योंकि मेरा हृदय नहीं कह रहा है। दमयन्ती अपने कक्ष में चली गई। सायँकाल का समय था, परन्तु देखो अपने आसनों पर विद्यमान हो गए। एक वाक् और कहा था उन्होंने अपनी पत्नी से देवी! यह तुमने क्या रचना रची है? तो महारानी ने कहा प्रभु रचना क्या है यहाँ राजा कोई नहीं है, तो आपको ही निमन्त्रित करने के लिए मैंने इतना परिश्रम किया है। यहाँ कोई राजा नहीं है, स्वयँवर रचना नहीं है। तो वह जब अपने कक्ष में चले गए, तो रात्रि का मध्य काल जब समाप्त हुआ, उस समय महाराजा नल प्रसन्न हुए और प्रसन्न होकर उन्होंने प्राण और मन दोनों को एकाग्र किया। एक सूत्र में सूत्रित करके उन्होंने गान गाया, जब गान गाने लगे तो मुनिवरो! कहते हैं ऐसा मुझे स्मरण कराया जब गान गाया, तो सर्वत्र नगर की एक दीपमालिका बन गयी। जब दीमालिका बन गई तो राजा दमयन्ती के पिता जो राजा थे वह अपने आसन को त्याग करके अपनी महारानी से बोले देवी! मुझे ऐसा

प्रतीत हो रहा है कि कहीं नल हमारे नगर में विद्यमान हैं। नल ही इस प्रकार का गान जानता है जो दीपमालिका नगरों की बन जाती है। जब उन्होंने यह कहा कि दीपमालिका बनती रहती है, दीपमालिका का प्रसङ्ग आया तो दीपावली बन गयी नगर की देखो उनके, उनके राजगृह की भी दीपावली की भाँति एक दीप आकृतियाँ बन गई। महारानी दमयन्ती को यह विश्वास हो गया कि यही मेरा स्वामी, मेरा पूज्य देव है। प्रातःकालीन राजा नल के समीप जा के चरणों का स्पर्श किया। हे देव! वास्तव में आपने दीपमालिका बना दिया हमारे नगर को। राजा तुंगध्वज को यह प्रतीत हुआ कि तो यह नल था तुम्हारे यहाँ सेवक का कार्य करता रहा, वाहन इत्यादियों का क्रियात्मक कर्म कराता रहा। मुझे कुछ ऐसा स्मरण है ऐसा मुझे नृत्य कराया है कि राजा ने 'सम्भो देवो ब्रह्मा लाका कृत्ती लोकास्ता' महारानी दमयन्ती ने उसे जान करके उनके चरणों की वन्दना की और महाराजा तुंगध्वज को उनके वाहन में बिठा उनके गृह में पुनः लौटा आए। नल के चरणों को स्पर्श किया कि महाराज मेरे यहाँ कुछ समय तक वास किया मैं तो बड़ा कृति में अभागा हूँ। मैं आपको जान नहीं पाया हूँ, मेरा यह बड़ा दुर्भाग्य रहा है। राजा नल ने कहा कोई कार्य नहीं, मेरा यह आपत्तिकाल है। मेरा आपत्तिकाल भी समाप्त हो गया है। मेरा बारह वर्ष का काल समाप्त हो गया है और देखो मेरे जीवन की प्रतिभा एक महान् बन गई है।

शब्द विज्ञान

मैं उच्चारण कर रहा था। यह दीपमालिका का वर्णन हमारे वैदिक साहित्य में, वायु को वाहन बना करके एक दीपमालिका का वर्णन आता रहता है। वाहन के रूप में गान गाने वाले की कोई सीमा नहीं होती। एक गान गा रहा है माता प्रसन्न हो रही है, बाल्य गान गा रहा है माता प्रसन्न हो रही है। एक गान ब्रह्मवेत्ता ब्रह्म का गान गा रहा है समाज प्रसन्न हो रहा है। एक गान गाता हुआ अन्तर्हृदय में उनका

हृदय स्वतः प्रसन्न हो रहा है। तो गान गाने वाले कुछ योगेश्वर इस प्रकार के भी हुए हैं जिन्होंने शब्द विज्ञान के ऊपर बहुत अनुसन्धान किया है। जिन्होंने गान के ऊपर बहुत अनुसन्धान किया है। यह जो गायत्री है जो माँ के रूप में गाई जाती है, क्योंकि गान कौन गाता है, गायत्री क्या है? जो मुनिवरो! देखो गाई जाती हो। **प्रत्येक वेद के मन्त्र को गायत्री कहते हैं।** कौन गाता है, गायत्री क्या है? जो मुनिवरो! देखो गाई जाती हो, प्रत्येक वेद के मन्त्र को गायत्री कहते हैं। हमारे यहाँ गायत्री नामोकरण एकोकी का ही नहीं कहलाता। यह गायत्री इसलिए विशेष मानी जाती है कि इसमें 24 अक्षर माने गए हैं, इसलिए मानव का शरीर भी 24 खम्बों वाला है, यह ब्रह्माण्ड भी 24 खम्बों वाला है। 10 प्राण हैं, 10 इन्द्रियाँ हैं और मुनिवरो! मन, बुद्धि, चित्त और अहँकार कहलाता है। यह 24 खम्बों वाला यह बह्माण्ड हमें दृष्टिपात आ रहा है। यही मानव के शरीर में है, यह 24 खम्बों वाला ब्रह्मा मानवीय शरीर कहलाता है। जिसके ऊपर यह आधारित रहता है, प्राणेश्वर अपनी आभा में गति करता रहता है। तो परिणाम क्या? जब वह गान गाता है, गान गाने वाला गाता ही रहता है सदैव ही गाता है। जब माता मल्हार गान गाती है, तो मेघों से वृष्टि प्रारम्भ हो जाती है। जब मानव पाडित्व गान गाता है, तो उसकी पाँडित्य की धारा अन्तरिक्ष में ओत-प्रोत हो जाती है। यजमान जब यज्ञशाला में स्वाहा कह करके हृदय से गान गाता है तो मुनिवरो! देखो यज्ञशाला की तरङ्गों के साथ में उनके जो स्वाहा शब्द हैं वह अन्तरिक्ष में ओत-प्रोत हो जाते हैं।

मेरे प्यारे! देखो मुझे स्मरण आता रहता है इसके ऊपर नाना वैज्ञानिक हुए हैं जिन वैज्ञानिकों ने बहुत अनुसन्धान किया है। यह विज्ञान महाराजा महर्षि भारद्वाज मुनि की यज्ञशाला में भी विद्यमान था। यही विज्ञान मेरे पुत्रो देखो उद्दालक गोत्र के कुछ गान केतु ऋषि के आश्रम में भी यह विज्ञान पनपता रहा है। मैं इस विज्ञान के ऊपर कोई

विशेष विवेचना देना नहीं चाहता हूँ। परन्तु विचार यह है कि ऐसे-ऐसे यन्त्रों का निर्माण भी हुआ है जैसे शब्द है, शब्द के साथ में उसका चित्र यन्त्रावलियों में दृष्टिपात आता रहा है। यज्ञोमयी ब्रह्मा वाचाः इस शब्द को लेकर के रचना की गयी है। तो विचार क्या? मेरे पुत्रो देखो वेद कहता है कि यह शब्द विज्ञान है, सात्विकता में रमण करने वाला जो सत्यता में रहने वाला है, उसके ऊपर मानव को सदैव चिन्तन और मनन करना चाहिए। हृदय से इसके ऊपर विचारशील बन करके अपनी आभा में आभाहित रहना चाहिए जिससे मानव का जीवन पवित्रता में रमण करता हुआ, हम वैदिक विज्ञान को वैदिक-गान को अपने साकार रूप में ला करके दर्शाते रहें, विचार विनिमय करते रहें।

गान की महिमा

विचार क्या है? एक पण्डित गान गा रहा है, माता अपने पुत्र से कहती है हे बालक! तू सदैव सत्यवादी बन। सत्यवादी बनने के लिए माता ही प्रेरणा क्यों देती है, आचार्य क्यों प्रेरणा दे रहा है सत्य उच्चारण करने की। इसलिए दे रहा है क्योंकि माता का हृदय है, वह बाल्य माता का हृदय है और आचार्य का देखो कुल कहलाता है। वह विद्यालय में कुल है माता का हृदय है पिता की श्रति है। सर्वत्रीय हे ब्रह्म वर्चोसी तू ब्रह्म वर्चोसी बन, ब्रह्म वर्चोसी का अर्थ है वह सत्यवादी बन। वह सार्थकता में रमण कर रहा है जो प्राण और मन को दोनों को एक सूत्र में लाना जानता है। जो ऋचाती प्रतिभा को लोकों की श्रुतियों में कटिबद्ध कर देता है, वही तो सत्य में रमण करता है। जब मैं अन्तरिक्ष के गान रूप में प्रवेश करता हूँ जैसे लोक-लोकान्तर हैं। एक दूसरा एक-दूसरे के प्रति गान गा रहा है। गान का अभिप्राय है उसे उल्लास दे रहा है। जैसे माता की परिक्रमा करने वाला पुत्र है, कहीं माता पुत्र की परिक्रमा कर रही है और क्योंकि उसी से माता का शब्द का निर्माण हुआ है, वह गान गाता है। परन्तु देखो वही वृत्तियों

में वह पुत्र माता की, माता पुत्र की परिक्रमा कर रही है। **परिक्रमा का अर्थ है गान गाना।** कहीं मुनिवरो! देखो पुत्र माता का गान गा रहा है, उसकी प्रसन्नता में मानव मग्न हो रहा है, गान गाता है हृदय से गा रहा है, ममता कर रहा है। इसी प्रकार कहीं पिता की परिक्रमा कर रहा है, पिता पुत्र की परिक्रमा कर रहा है। वह गान रूपों में सत्यता से उपदेश दे रहा है। विचार-विनिमय क्या? मेरे पुत्रो देखो! इसी प्रकार प्राणी एक-दूसरे की परिक्रमा कर रहा है। एक वेद का पठन-पाठन करने वाला भयङ्कर वनों में गान गा रहा है, सिंहराज उस ध्वनि को श्रवण कर रहा है। सर्पराज आ करके उसके चरणों में ओत-प्रोत हो रहा है। वह गान की महिमा है, जो गाता है हृदय से जब गाता है तो गान को पान करता हुआ परमात्मा के गान से उसका समन्वय हो जाता है। मुनिवरो! देखो, इस लोक में एक प्राणी दूसरे की परिक्रमा कर रहा है। गान गाने के रूप में मेघगान गाता है।

मुझे स्मरण आता रहता है शतपथ ब्राह्मण के ऋषि ने एक बहुत ही ऊँची वार्ता प्रकट की है। देखो वेद का ऋषि याज्ञवल्क्य मुनि कहता है कि एक समय याग हो रहा था वाजपेयी याग। जब याग हो रहा था, तो याग को वह व्रणीऽस्ते काला हिरण याग को ले गया और याग को ले जा करके उसने वृत्रासुर को अर्पित कर दिया। वृत्रासुर ने उसकी वृष्टि कर दी और वृष्टि करके वहाँ बैल की, गौ के बछड़े की वहाँ बलि का वर्णन आया। **बलि का अभिप्रायः यह है** कि पुरुषार्थ करना बलि से पुरुषार्थ करके पृथ्वी पर यह जो वृष्टि वृत्रासुर ने की इस पृथ्वी के गर्भ से मुनिवरो! नाना प्रकार का खाद्य पदार्थों को उत्पन्न करने का नाम भी गान के रूप में परणित किया गया है। वैदिक साहित्य वालो ने बहुत से ऊँची युक्तियाँ देते हुए कहा है कि गान कौन गाता है? इन्द्र गान गा रहा है, तरङ्गों के द्वार याग को मुनिवरो! देखो धुन्ध ले गया, धुन्ध ने उसी को वृत्रासुर को प्रदान कर दिया। वृत्रासुर नाम मेघों

का कहा गया है, मेघों ने उसकी धीमी वृष्टि कर दी है। देखो अन्न की उत्पत्ति हो गयी, मानव अन्न की परिक्रमा करने लगा या अन्न मानव की परिक्रमा, उससे गान गाने लगा 'अन्नादम् भूतप्रहे लोकाम् देवाः हे अन्नादम् भूज्यऽस्तोः' इस प्रकार का गान जब स्वर ध्वनियों में परणित होता है, मुझे ऐसा स्मरण है जहाँ मानव यह गान गाता है, वहाँ मल्हार एक गान होता है जिससे मेघ उत्पन्न हो करके वृष्टि होनी प्रारम्भ हो जाती है। ये चर्चाएँ तो मैं कहाँ तक करता रहूँगा यह तो वैदिक साहित्य की चर्चाएँ हैं। काल आता रहेगा मैं वर्णन करता रहूँगा।

परन्तु आज का विचार-विनिमय क्या कि हे गायत्री माँ! तू गाई जाती है। प्रत्येक वेद मन्त्र को गायत्री कहते हैं, गान रूपों में तू गाई जाती है। जब गाई जाती है तो गान गाने वाला गान ध्वनि से गा रहा है, इसी प्रकार एक दूसरा प्राणी प्राणी की परिक्रमा कर रहा है। प्राणी ही नहीं एक लोक दूसरे लोक की परिक्रमा कर रहा है जैसे यह पृथ्वी है यह सूर्य की परिक्रमा कर रही है, सूर्य वृहस्पति की परिक्रमा कर रहा है, वृहस्पति आरुणी मण्डल की परिक्रमा कर रहा है। आरुणी मण्डल ध्रुव की परिक्रमा कर रहा है, ध्रुव मण्डल जेठायन नक्षत्र की परिक्रमा कर रहा है। जेठाय नक्षत्र स्वाँति नक्षत्रों की परिक्रमा कर रहा है। स्वाँति नक्षत्र आस्वेतु मण्डल की परिक्रमा कर रहे हैं। आस्वेतु मण्डल अचल मण्डलों की परिक्रमा कर रहे हैं, अचल मण्डल क्रीति मण्डलों की परिक्रमा कर रहे हैं, क्रीति मण्डल कोणकेतू मण्डल की परिक्रमा कर रहे हैं, कोणकेतु मण्डल गन्धर्व लोकों की परिक्रमा कर रहे हैं, गन्धर्व लोक इन्द्र की परिक्रमा कर रहे हैं। यह इन्द्र से ले करके, पृथ्वी से ले करके एक सौर-मण्डल बन गया है। एक सौर-मण्डल यह विशाल इसमें अरबों-खरबों लोक लोकान्तर गतियाँ कर रहे हैं। मुनिवरो! देखो परिक्रमा गान के रूप में, सूत्र के रूप में इनका एक सूत्र बना हुआ है, वह चेतना है जो इनको एक-दूसरे में पिरो रहा है। वह पिरोने वाली चेतना ही एक महान् है, वही सूत्र कहलाता है जो नाना सौर-मण्डल

आकाश-गङ्गा में गति कर रहे हैं। आकाश-गङ्गा में गणना करने वालों ने यहाँ तक गणना की है कि आकाश-गङ्गा में लगभग एक खरब के लगभग सौर-मण्डल कहलाते हैं और ऐसी-ऐसी आकाश-गङ्गाएँ जिन आकाश-गङ्गाओं में इस प्रकार के खरबों में सौर-मण्डल हों ऐसी-ऐसी आकाश-गङ्गाएँ ऋषि मुनियों की विज्ञानशाला में लगभग नौ सौ बहत्तर आकाश-गङ्गाएँ दृष्टिपात आती रहती हैं।

मेरे प्यारे इस प्रकार का विज्ञान हमारे राष्ट्रीयता में, हमारे वैदिक साहित्य में आता रहा है। इन सौर-मण्डलों में मैंने तुम्हें वर्णन कराया है कई काल में वर्णन कराया है। आज भी तुम्हें परिचय दिए देता हूँ, तीस लाख पृथ्वियाँ हैं जो सूर्य की परिक्रमा कर रही हैं। एक सहस्र सूर्य हैं जो आरुणी मण्डल की परिक्रमा कर रहे हैं। एक सहस्र आरुणी हैं जो ध्रुव मण्डल की परिक्रमा कर रहे हैं। एक सहस्र ध्रुव हैं जो मुनिवरो! देखो जेठाय नक्षत्र की परिक्रमा कर रहे हैं। एक सहस्र जेठाय नक्षत्र हैं जो वृत्तिमण्डलों की, मूल नक्षत्रों की परिक्रमा कर रहे हैं। ऐसे-ऐसे अचल मण्डल एक सहस्र अचल मण्डलों की परिक्रमा कृति मण्डलों की परिक्रमा गन्धर्व लोक एक सहस्र लोक इस इन्द्र की परिक्रमा करते हुए यहाँ तक एक सौर-मण्डल बनता है। यह सौर-मण्डल बना है और सौर-मण्डल भ्रमण करने वाला आकाश-गङ्गाओं में है, एक आकाश-गङ्गा में इसमें एक अरब निन्यानवे करोड़ के लगभग सौर-मण्डल हैं। ऐसी-ऐसी आकाश-गङ्गाएँ याज्ञवल्क्य ऋषि, महर्षि भारद्वाज मुनि के विद्यालय में उनके यहाँ विज्ञानशालाओं में नौ सो बहत्तर आकाश-गङ्गाएँ दृष्टिपात आती रही हैं। मुनिवरो! यह ब्रह्माण्ड है एक-दूसरे में नृत्य कर रहा है, गान गा रहा है, एक सूत्र में पिरोया हुआ है। जैसे मानव के मस्तिष्क में एक अनहद ध्वनि होती है, उस अनहद ध्वनि को जान करके दीपमालिका का गान गाते हैं। कहीं मल्हार गान गाते हैं, कहीं श्राती गान गाते हैं, कहीं जटा गान गाते हैं, कहीं उदात्त, अनुदात्त स्वरों की ध्वनि बन जाती है।

मेरे प्यारे मैं विशेष विवेचना तुम्हें देने नहीं आया हूँ। मैं गम्भीर समुद्रों में चला गया हूँ। इन समुद्रों में जाने के लिए नहीं आया हूँ। विचार-विनिमय क्या कि मुनिवरो! देखो परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए हम उसका गान गाते रहें। माँ गायत्री! तू गाने के रूप में गाई जाती है और तेरे गर्भस्थल में सर्वत्र ब्रह्माण्ड का गान हो रहा है। यह है बेटा! आज का वाक्।

आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय क्या कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, हम दीपमालिका का गान गाते, इस संसार सागर से पार हो जाएँ। यह है बेटा! आज का वाक्, अब समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रकट करूँगा। आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

महर्षि महानन्द जी– अच्छा भगवन् आज्ञा!
पूज्यपाद गुरुदेव–ओ३म् शान्ति शान्ति शान्ति!

दिनाँक : 16 अगस्त, 1983
समय : दोपहर 3 बजे
स्थान : श्री रघुवीर सिंह त्यागी
कैथवाड़ी, मेरठ

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. अनुष्ठान का अभिप्राय यह है कि जिसको अनूठा ज्ञान प्राप्त करना हो।
2. रात्रि के तीसरे याम में सतोयुग का प्रभाव आ जाता है।
3. जीवन के लिए मानव को प्रत्येक प्रकार के ज्ञान विज्ञान की आवश्यकता है।
4. वाणी का जो उद्‌गार है वह मानव के शरीर में जिसको ब्रह्मरन्ध्र कहते हैं, जहाँ नाना प्रकार की नस नाड़ियों का समूह होता है वहाँ से उसकी रचना होती है।
5. मानव की वाणी का सम्बन्ध द्यु-लोक से होता है।
6. बुद्धि का सम्बन्ध मन से होता है।
7. चित्त में जैसे संस्कार होते हैं उसी के शब्दों की रचना द्यु-लोक से इस मानव शरीर प्रायः होने लगती है।
8. हे ब्राह्मण! जब तू यज्ञशाला में विराजमान होता है तो तेरी वाणी में तेज होना चाहिए।
9. ब्राह्मण समाज सब धर्म में पिरोया हुआ होगा उस समय यह समाज पवित्र बन जाता है।
10. निरपेक्षता उसे कहते है जिसका हृदय विशाल है।
11. यदि स्वार्थ न रहेगा तो यह रूढ़ि नहीं रहेगी।
12. हमें धर्म और मानवता को, राष्ट्र और धर्म को ऊँचा बनाना है।
13. जब दैत्यों का दमन किया जाता है और देवताओं की रक्षा की जाती है इसी को धर्म कहा जाता है।
14. मृत्यु उसी को कहा जाता है जहाँ क्रोध की मात्रा के प्रभाव में आकर जहाँ देवता भी ठुकरा दिए जाते हैं।

।। ओ३म् ।।

पाणि-ग्रहण की शुभकामनाएँ

श्रीमती साधना सोलंकी धर्मपत्नी श्री यशोधर्मा सोलंकी निवासी ग्राम जिवाना गुलयान जिला बागपत (उ.प्र.) ने अपने सुपुत्र प्रिय शुभाशीष आर्य के सौभाग्यवती हिना आर्य के सङ्ग पाणि-ग्रहण के शुभावसर पर अत्यन्त हर्षोल्लास एवं उदारता से 1100/- रुपये का सात्विक सहयोग पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवर्षा को जनकल्याण के लिए प्रकाशित करने के लिए प्रदान किया है। जिसके लिए समिति हृदय से आभार प्रकट करती है।

यह परिवार पूज्यपाद गुरुदेव के सान्निध्य में प्रारम्भ से ही सम्पन्न होने का सौभाग्य प्राप्त करता रहा है। सोलंकी जी के पिताजी स्वर्गीय श्री शीतलदेव सैनानी जी लाक्षागृह बरनावा के आश्रम के कार्यों में तन, मन, धन से अपने जीवन की आहुति प्रदान करते हुए समिति के कोषाध्यक्ष के कार्यों को भी अपनी पूर्ण निष्ठा से सम्पन्न करते हुए उसकी उन्नति में गति

प्रदान करने में निरन्तर संलग्न रहे और अपने नम्र स्वभाव व उदारता के लिए सभी के मध्य में अपनी मधुर वाणी के लिए बहुत ही लोकप्रिय थे।

अपने पिताश्री के जीवन के आदर्शों को अनुकरण करते हुए श्री यशोधर्मा सोलंकी अपनी पत्नी सहित पूज्यपाद गुरुदेव के याज्ञिक कार्यों में यजमान बनने में संलग्न हो गए और धीमे-धीमे अपने जीवन को ऊर्ध्वा में ले जाते हुए प्रवचनों का अध्ययन व मनन करने लगे और साकार रूप देने के लिए अपने पिताश्री के पश्चात आश्रम के कार्यों को तन्मयता से करते हुए समिति के उपमन्त्री के कार्य को अपनी सेवावृत्ति में संलग्न रहने के साथ-साथ बहुत ही कुशलता एवं दक्षता से निर्वाह किया। उसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए अब भी निरन्तर आश्रम पर होने वाले यज्ञों में यजमान बनने में सलंग्न रहते हैं।

अपने जीवन में प्राप्त की गई शिक्षा व आदर्शों का पूर्ण निर्वाह करते हुए श्री सोलंकी व उनकी धर्मपत्नी ने अपने चिंरजीव सुपुत्र का पाणि-ग्रहण एक आदर्श परम्परा को समाज में स्थापित करते हुए प्रकाशमान किया है जो सभी के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है और अपने इस आनन्द की पावन वेला को ऋषि-मुनियों के आर्शीवाद प्राप्त करने के लिए अपने क्रियाकलाप को उनकी आज्ञाओं से ओतप्रोत कर दिया है।

चिरंजीव शुभाशीष एवम् उनकी धर्मपत्नी हिना को इस पवित्र बंन्धन के लिए समिति हृदय से बारम्बार आर्शीवाद प्रदान करती है और परमपिता परमात्मा से समस्त परिवार की सुख, शान्ति, दीर्घायु एवं सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

।। ओ३म् ।।

जन्मदिवस की शुभकामनाएँ

चिरंजीव यशवर्धन

श्रीमती सोमलता त्यागी धर्मपत्नी श्री अशोक कुमार त्यागी निवासी ग्राम बरला जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) ने अपने सुपौत्र चिरंजीव यशवर्धन सुपुत्र श्रीमती रश्मि त्यागी व श्री रविकान्त त्यागी के जन्मदिवस की पावन वेला के शुभावसर पर 1100 रुपये का सात्विक सहयोग समिति के प्रकाशन के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए अत्यन्त उदारता एवम् हर्ष के साथ प्रदान किया है जिससे कि साहित्य जनकल्याण तक निरन्तर ज्ञान का स्रोत बहता रहे।

यह परिवार पूज्यपाद गुरुदेव के प्रवचनों एवम् याज्ञिक कार्यों से उनके ग्राम वरला में आगमन से ही जुड़ गया और शनैः-शनैः अपने जीवन को वैदिक सम्पदा से सम्पन्न करने में जुट गया उसी प्रयास को गति प्रदान करने में बाल-बालिकाओं को भी संलग्न करते हुए प्रयत्नशील है और उसी धारा को प्रकाशमान रखने के लिए अमृत वर्षा के प्रचार के लिए अपना सहयोग प्रदान किया है जिसके लिए समिति हृदय से आभार प्रकट करती है।

प्रिय यशवर्धन को जन्मदिवस की शुभकामना प्रदान करते हुए समिति ऐसे श्रद्धालु एवम् याज्ञिक परिवार की सुख, शान्ति, दीर्घायु एवम् सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

दान-सूची

वैदिक अनुसन्धान समिति के प्रकाशन के कार्य के लिए निम्न याज्ञिक एवम् श्रद्धालु महानुभावों ने अपना सात्त्विक सहयोग प्रदान किया है :

1.	भरत कुमार पुत्रश्री मूलचन्द जी, सुराना, मुरादनगर	2100 रुपये
2.	डॉ. ओमबीर आर्य, ननौता, सहारनपुर	101 रुपये
3.	श्री योगेन्द्र सिंह, बुलन्दशहर	1100 रुपये
4.	श्री सूरजमल कश्यप, बेरीवाले, बरनावा	51 रुपये
5.	श्री यादराम बलजीत सिंह, भामौरी	100 रुपये
6.	श्री कालूराम त्यागी, दिनकरपुर	500 रुपये
7.	मा. शिवराज व दुष्यन्त त्यागी, दिनकरपुर	501 रुपये
8.	श्री कमल सिंह जी, मोदीनगर	251 रुपये
9.	श्री सोनू राठी, सैनपुर, मुरादनगर	500 रुपये
10.	श्री तुषांक चौ. बुडीना कला	101 रुपये
11.	श्री सुरेश शर्मा जी, खरखौदा	100 रुपये
12.	श्री गमदूर सिंह, फफून्डा, मेरठ	201 रुपये
13.	प्रतिभा आर्य पुत्री श्री विवेक सिंह, सलेमपुर, मुरादनगर	511 रुपये
14.	श्री हरिशंकर भारद्वाज जी, मोदीनगर	100 रुपये
15.	श्री बलवीर त्यागी जी, बरनावा	101 रुपये
16.	श्री राकेश जी, धनौरा, हापुड़	220 रुपये
17.	कुमारी सौम्या त्यागी, मोदीनगर, गाजियाबाद	501 रुपये
18.	श्री राजेन्द्र प्रसाद त्यागी जी, रेहदरा, मेरठ	250 रुपये
19.	श्री जयप्रकाश, दिल्ली	250 रुपये
20.	श्री राजेन्द्र शर्मा जी, रासना, मेरठ	1100 रुपये
21.	श्री अंकुर त्यागी, कुतुबपुर	101 रुपये
22.	श्री राजेन्द्र प्रसाद जी, नंगलातासी, मेरठ	100 रुपये
23.	श्री रतिराम जी, माछरा, मेरठ	101 रुपये
24.	शामा त्यागी व कुलदीप त्यागी, माछरा, मेरठ	500 रुपये
25.	श्री राजकिशोर त्यागी, मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
26.	श्री सत्यप्रकाश, मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
27.	श्री महिपाल, तलैहटा, गाजियाबाद	500 रुपये

28. श्री दिनेश कुमार, कुरालसी	100 रुपये
29. श्री सुरेश, कुरालसी	100 रुपये
30. श्री राजबीर, कुरालसी	100 रुपये
31. सपना, बुढ़ाना बुढ़ाना चदडी	100 रुपये
32. श्री विशाल त्यागी, बरनावा	100 रुपये
33. श्री जगबीर गिरि जी, मुरादनगर, गाजियाबाद	500 रुपये
34. श्री कृपाल सिंह, संजय नगर, गाजियाबाद	100 रुपये
35. ऋषि आर्य, मा. हरी	100 रुपये
36. श्री राजेन्द्र, शाहदरा दिल्ली	501 रुपये
37. श्री प्रवेश, शाहदरा दिल्ली	501 रुपये
38. श्री लोकेश, शाहदरा दिल्ली	100 रुपये
39. श्री रतनलाल हलवाई, बरनावा	500 रुपये
40. श्री मूलचन्द व मुकेश त्यागी, मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
41. श्री प्रताप सिंह, फफून्डा, मेरठ	100 रुपये
42. श्री धर्मपाल, मवाना, मेरठ	100 रुपये
43. श्री ज्ञानचन्द, नराडा, मेरठ	100 रुपये
44. श्री ईश्वर त्यागी, मोरटा, गाजियाबाद	500 रुपये
45. शगुन त्यागी, नोएडा	500 रुपये
46. कुन्ती, रहदरा	100 रुपये
47. सोनिका त्यागी, बरनावा	50 रुपये
48. श्री मदन शर्मा, कैथकड़ी, मेरठ	51 रुपये
49. श्री मनोज, बरनावा	50 रुपये
50. श्री भीम सिंह, हर्रा	500 रुपये
51. श्री मंगल सेन पुत्रश्री दीपचन्द, फफून्डा, मेरठ	1100 रुपये
52. श्री वीर सिंह पुत्रश्री तिरखा सिंह, फफून्डा, मेरठ	2500 रुपये
53. श्री कृष्णपाल, गाजियाबाद	50 रुपये
54. श्री त्रिलोक चन्द, फफून्डा, मेरठ	150 रुपये
55. श्री सैम्मी, चंडीगढ़	500 रुपये
56. श्री नरेन्द्र मलिक गा. झाल, शामली	100 रुपये
57. श्री सतपाल गा. झाल, शामली	100 रुपये
58. श्री निशान्त त्यागी व आस्था त्यागी	2100 रुपये

59. श्री राजेश्वर त्यागी, माछरा, मेरठ	4100 रुपये
60. श्री हिमांशु त्यागी पुत्रश्री रोहित त्यागी	500 रुपये
61. श्रीमती कमला देवी पत्नी श्री नफेसिंह	1100 रुपये
62. अनीता त्यागी, मुकारी, गाजियाबाद	2100 रुपये
63. श्री विक्रम त्यागी व गौतम त्यागी, कालंद	500 रुपये
64. श्री प्रमोद त्यागी व उषा त्यागी, बुराड़ी	3100 रुपये
65. पं. शिवकुमार शर्मा, नगंला ओडर, मेरठ	251 रुपये
66. श्री अभिनय शर्मा, नगंला ओडर, मेरठ	151 रुपये
67. स्वर्गीय हेमवती माता जी, बरनावा	100 रुपये
68. श्री टीटू त्यागी, तलैहटा, गाजियाबाद	51 रुपये
69. श्री महेश तलवा भाजना, शामली	251 रुपये
70. श्री नितिन, बुढ़ाना मुजफ्फरनगर	50 रुपये
71. श्री नवीन कुमार, सुपुत्रश्री रामनाथ सिंह कलीना, मेरठ	500 रुपये
72. श्री सुरेन्द्र, बीमतरा	500 रुपये
73. श्री सरोज गुप्ता, छतरपुर दिल्ली	101 रुपये
74. श्री सुनीता पारासर, नई दिल्ली	1100 रुपये
75. आयुषी आर्य, मुरादनगर	101 रुपये
76. गुप्तदान	1100 रुपये
77. श्री आर. के. गोयल, नई दिल्ली	250 रुपये
78. श्री राममूल प्रजापति, मीरपुर, मेरठ	50 रुपये

सभी उपरोक्त दान दाताओं का समिति हृदय से आभार प्रकट करती है और उनको परिवार सहित जीवन में सुख, शान्ति व सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

।। ओ३म् ।।

वियोग

पूज्य माताश्री श्रीमती जगवती देवी त्यागी

परमपिता परमात्मा की सृष्टि में अणु परमाणुओं का योग निरन्तर क्रियाशील रहता है और जिसके सहयोग से आत्मा को आत्मलोक में प्रवेश करने का अवसर क्रियाशील बना हुआ है। प्रत्येक मानव अपने चित्त के मण्डल के संस्कारों के अनुसार इस आवागमन के क्रम में अपनी मुक्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है इस आवागमन को अद्भुत व विचित्र प्रक्रिया को मानव देखते हुए भी प्रायः समझने में जीवन भर अनजान ही बना रहता है और ध्रुर्वा व ऊर्ध्वागति को प्राप्त होते हुए अपने कर्मों के आधार पर अपने लोको को गमन कर जाता है।

इसी प्रक्रिया में पूज्या माताजी श्रीमती जगवती देवी त्यागी धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री ओमप्रकाश त्यागी निवासी ग्राम दिनकरपुर जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) अपने परिवार को सब प्रकार से शिक्षित व वैदिक सम्पदा से सम्पन्न तथा आत्मनिर्भरता का मार्ग प्रदर्शित करते हुए दिनाँक 31 जनवरी 2018 को 93 वर्ष की आयु में नश्वर शरीर को त्यागकर सब के मध्य से पंचतत्वों में विलीन हो गयी माता जी अपने में बहुत ही सहनशील, उदार व व्यवहारकुशल तथा पूज्यपाद गुरुदेव के प्रति अत्यन्त श्रद्धालु थीं इन्हीं सभी गुणों से उन्होंने अपने परिवार तथा सम्बन्धियों व मित्रों को भी सम्पन्न बनाने में अपना जीवन व्यतीत किया।

अपनी प्रिय पूज्या दादी जी की स्मृति में सर्वश्री सचिन त्यागी व मंयक त्यागी जी ने पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज के श्री चरणों में श्रद्धा सुमन के रूप में 2100 रुपये का सात्विक सहयोग साहित्य के प्रकाशन के लिए अर्पित किया है। इस वियोग की घड़ी में संतृप्त परिवार को सहन करने शक्ति प्रदान करने के लिए समिति प्रभु के विनम्र प्रार्थना करती है और प्रकाशन के सहयोग के लिए हृदय से आभार प्रगट करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

सदस्यता

पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की ज्ञान गङ्गा का मासिक पत्रिका ''यौगिक प्रवचन'' में, वैदिक अनुसन्धान समिति द्वारा प्रकाशन किया जाता है और जिस के आजीवन सदस्य बनने के लिए शुल्क 800 रु. और वार्षिक सदस्य बनने के लिए शुल्क 100 रु. है जिसको आप समिति के पते के साथ-साथ निम्न किसी एक पते पर भी डाक द्वारा भेजकर सदस्य बन सकते हैं–

1. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मन्त्री
   ए-59, पँचशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017, फोन : 011-41030481
2. सुश्री नीरू अबरोल, कोषाध्यक्ष
   K-3, लाजपत नगर,-III, नई दिल्ली-110024 फोन : 011-41721294
3. श्री जितेन्द्र चौधरी, प्रचार मन्त्री
   ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मोबाइल : 9811707343

सूचना

सभी आजीवन/वार्षिक सदस्यों को 'यौगिक प्रवचन' पत्रिका प्रत्येक मास की 10/11 तारीख को प्रेषित की जाती है। किसी भी सदस्य को पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में अपने पोस्ट मैन से एक सप्ताह के समय में जानकारी करें और फिर भी न मिलने की स्थिति में अपने सम्बन्धित पोस्ट ऑफिस में इस विषय में लिखित एक प्रार्थना-पत्र पोस्ट मास्टर साहब को दें जिससे कि पत्रिका न मिलने की खोज-बीन डाक विभाग द्वारा कराके आपकी पत्रिका आपको समय पर मिलनी प्रारम्भ हो जाए। कृपया प्रार्थना-पत्र की एक प्रति पर डाक विभाग द्वारा प्राप्ति के हस्ताक्षर व मोहर लगवाकर हमें भी भेज देवें जिससे कि इस विषय में यहाँ भी डाक विभाग को अवगत करा दिया जाए।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	80.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	80.00
3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	60.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	100.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	60.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	80.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	25.00
8.	आत्म-लोक	35.00
9.	धर्म का मर्म	40.00
10.	शंका-निवारण	35.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्व	40.00
12.	आत्मा व योग-साधना	35.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	125.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	125.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	125.00
17.	रामायण के रहस्य	35.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	45.00
19.	महाभारत के रहस्य	30.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	35.00
21.	रावण-इतिहास	50.00
22.	महाराजा-रघु का याग	30.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	35.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	35.00
25.	चित्त की व वृत्तियों का निरोध	35.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	35.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	35.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	40.00
29.	याग-मन्जूषा	40.00
30.	आत्म-दर्शन	30.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मात-दर्शन	30.00
32.	याग और तपस्या	60.00
33.	यागमयी-साधना	35.00
34.	यागमयी-सृष्टि	35.00
35.	याग-चयन	40.00
36.	दिव्य-रामकथा	120.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	35.00
38.	दिव्य-ज्ञान	40.00
*39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	90.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	40.00
41.	आत्म-उत्थान	40.00
42.	तप का महत्व	40.00
43.	अध्यात्मवाद	40.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	40.00
45.	वैदिक-प्रभा	35.00
46.	प्रकाश की ओर	35.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	40.00
48.	वैदिक-विज्ञान	35.00
49.	धर्म से जीवन	35.00
50.	आत्मा का भोजन	40.00
51.	साधना	35.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	40.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	40.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	80.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	80.00
57.	माता मदालसा	60.00
58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	80.00
59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	80.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	80.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	80.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	80.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	80.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	50.00
65.	प्रभु-दर्शन	50.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	80.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	50.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	80.00
*69.	ब्रह्म की ओर	50.00
*70.	ईश्वर मिलन	50.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	80.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	80.00
*73.	नैतिक शिक्षा	50.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	100.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध हैः–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं 09719622950
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, A-59 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-2642052
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री विवेक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0122-2316196
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
12. पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
13. श्रीमती बाला, 251, दिल्ली गेट, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23282088
14. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
15. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09313530505
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

नम्र-निवेदन

समिति के बैंक के खाते में दान की राशि हस्तान्तरण करने से दानदाताओं का नाम, पता व उद्देश्य इत्यादि की जानकारी बैंक से पास नहीं हो पाती इसलिए सभी दानदाताओं से नम्र-निवेदन है कि राशि बैंक के खाते में हस्तान्तरण करने के साथ समिति की वेबसाइट पर या निम्न किसी भी एक पते पर दान राशि का अन्य विवरण सहित सूचना देने का कष्ट करें–

1. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मंत्री
   ए-59, पँचशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017, फोन : 011-41030481
2. सुश्री नीरू अबरोल, कोषाध्यक्ष
   के-3, लाजपत नगर-III, नई दिल्ली-110024 फोन : 011-41721294

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

हमें विचारना है कि हम सर्वत्र प्रभु को दृष्टिपात् करें, कण-कण में जब हम प्रभु को दृष्टिपात् करते हैं तो मानव पाप-कर्म नहीं करता। मानव पाप-कर्म उस काल में करता है जब परमात्मा को अपने से दूर कर देता है और दूर क्यों कर देता है? केवल अज्ञानता के वश क्योंकि वह प्रभु को जानता नहीं। जो मानव प्रभु को जानता है वह पाप नहीं करता, पाप वही मानव किया करता है जो प्रभु से दूर हो जाता है। जो प्रभु को कण-कण में, मनों में, चक्षुओं में, श्रोतों में, प्रत्येक इन्द्रिय में प्रभु की प्रतिभा स्वीकार करता है। जिसने जो वस्तु बनाई है उसमें वह रमण भी कर रहा है और जब मानव को यह निश्चय हो जाता है कि वहाँ मानव पाप नहीं करता।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 46 : अंक : 547
अप्रैल 2018

मूल्यः
दस रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R. No. DL (S)-01/3220/2018-2020
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-04-2018
Published on 5th day of the same month